

नारी चेतना में परिदृश्य एवं उसका विषयक दृष्टिकोण

Mohan Lal, Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur (M.P)



सारांश

नारी चेतना आधुनिक हिंदी साहित्य और सामाजिक विमर्श का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जो स्त्री के अस्तित्व, अधिकारों, स्वतंत्रता, अस्मिता और सामाजिक स्थिति से जुड़े प्रश्नों को व्यापक रूप में प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत अध्ययन में नारी चेतना के विविध परिदृश्यों तथा उसके विषयक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। भारतीय समाज में स्त्री की भूमिका लंबे समय तक पारंपरिक सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक मान्यताओं से निर्धारित होती रही है। आधुनिकता, शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक जागरूकता के विकास के साथ स्त्री ने अपने अधिकारों और व्यक्तित्व के प्रति नई चेतना विकसित की। साहित्य में यह चेतना स्त्री के अनुभवों, संघर्षों, आकांक्षाओं और आत्मसम्मान की अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। नारी चेतना केवल पुरुष वर्चस्व के विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि समानता, सम्मान, स्वतंत्र निर्णय, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता की स्थापना का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इस संदर्भ में स्त्री विमर्श पितृसत्तात्मक संरचनाओं, लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, सामाजिक रूढ़ियों तथा स्त्री की पहचान से जुड़े प्रश्नों को रेखांकित करता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य नारी चेतना के सामाजिक एवं साहित्यिक स्वरूप को समझना तथा उसके विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से स्त्री जीवन की बदलती परिस्थितियों का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन निष्कर्षतः स्पष्ट करता है कि नारी चेतना समानतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बीज शब्द: नारी चेतना, स्त्री विमर्श, नारी अस्मिता, पितृसत्ता, स्त्री स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, महिला सशक्तीकरण, सामाजिक न्याय, हिंदी साहित्य, नारी संघर्ष।

